CBSE Class 12 हिंदी कोर

Sample Paper 1 (2019-2020)

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न पत्र में तीन खंड हैं - क, ख, ग।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- दो अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।
- चार अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए।
- पाँच अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 120-150 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (12)**

   दबाव में काम करना व्यक्ति के लिए अच्छा है या नहीं, इस बात पर प्रायः बहस होती है। कहा जाता है कि व्यक्ति अत्यधिक दबाव में नकारात्मक भावों को अपने ऊपर हावी कर लेता है, जिससे उसे अक्सर कार्य में असफलता प्राप्त होती है। वह अपना मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी खो बैठता है। दबाव को यदि ताक़त बना लिया जाए, तो न सिर्फ सफलता प्राप्त होती है, बल्कि व्यक्ति कामयाबी के नए मापदंड रचता है। ऐसे बहुत सारे उदाहरण हैं जब लोगों ने अपने काम के दबाव को अवरोध नहीं, बल्कि ताक़त बना लिया। 'सुख-दुख, सफलता-असफलता, शान्ति-क्रोध और क्रिया-कर्म हमारे दृष्टिकोण पर ही निर्भर करता है।' जोस सिल्वा इस बात से सहमत होते हुए अपनी पुस्तक 'यू द हीलर' में लिखते हैं। कि मन-मस्तिष्क को चलाता है और मस्तिष्क शरीर को। इस तरह शरीर मन के आदेश का पालन करता हुआ काम करता है। दबाव में व्यक्ति यदि सकारात्मक होकर काम करे, तो वह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में कामयाब होता है। दबाव के समय मौजूद समस्या पर ध्यान केंद्रित करने और बोझ महसूस करने की बजाय यदि यह सोचा जाए कि हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं, जो एक कठिन चुनौती को पूरा करने के लिए तत्पर हैं, तो हमारी बेहतरीन क्षमताएँ स्वयं जागृत हो उठती हैं। हमारा दिमाग़ जिस चीज़ पर भी अपना ध्यान केंद्रित करने लगता है, वह हमें बढ़ती प्रतीत होती है। यदि हम अपनी समस्याओं के बारे में सोचेंगे, तो वे और बड़ी होती महसूस होंगी। अगर अपनी शक्तियों पर ध्यान केंद्रित करेंगे, तो वे भी बड़ी महसूस होंगी। इस बात को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि जीतना एक आदत है, पर अफ़सोस ! हारना भी आदत

ही है।

i. दबाव में काम करने के नकारात्मक प्रभाव समझाइए। (2)
ii. दबाव हमारी सफलता का कारण कब और कैसे बन सकता है? (2)
iii. दबाव में सकारात्मक सोच क्या हो सकती है? स्पष्ट कीजिए। (2)
iv. काम करने की प्रक्रिया में मन, मस्तिष्क और शरीर के संबंध को अपने शब्दों में समझाइए। (2)
v. आशय स्पष्ट कीजिए- "जीतना एक आदत है, पर अफ़सोस ! हारना भी आदत ही है।" (2)
vi. गद्यांश के केन्द्रीय भाग को लिखिए। (1)
vii. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1x4=4)**

मेरे देश तेरा चप्पा-चप्पा मेरा शरीर है
तेरा जल मेरा मन है
तेरी वायु मेरी आत्मा है
इन सबसे मिलकर ही
तू बनता है मेरे देश,
मैं और तू- दो तो नहीं हैं
शरीर, आत्मा, मन
एक ही प्राणी के
स्थूल या सूक्ष्म अंग हैं
मैं इन्हें बँटने नहीं दूंगा
मैं इन्हें लुटने नहीं देंगा
मैं इन्हें मिटने नहीं दूंगा !

i. “मैं और तू-दो तो नहीं हैं - किसे कहा गया है और क्यों?
ii. कवि ने देश से अपना तादात्म्य कैसे जोड़ा है?
iii. शरीर, आत्मा और मन का उल्लेख क्यों किया गया है?
iv. कवि क्या संकल्प व्यक्त करता है?

Section B

3. **प्राकृतिक आपदाएँ** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

परहित सरिस धर्म नहिं भाई विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

आज की बचत कल का सुख विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

4. किसी पर्यटन स्थल के होटल के प्रबंधक को निर्धारित तिथियों पर होटल के दो कमरे आरक्षित करने का अनुरोध करते हुए पत्र लिखिए। पत्र में उन्हें कारण भी बताइए कि आपने वही होटल क्यों चुना।

OR

निकट के शहर से आपके गाँव तक की सड़क का रख-रखाव संतोषजनक नहीं है। मुख्य अभियंता, लोक-निर्माण विभाग को एक पत्र लिखकर तुरंत कार्यवाही का अनुरोध कीजिए। समस्या के निदान के लिए एक सुझाव भी दीजिए।

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

   a. समाचार शब्द को परिभाषित कीजिए।

   b. फोन-इन का आशय समझाइए।

   c. समाचार के इंट्रो और बॉडी से आप क्या समझते हैं?

   d. वॉचडॉग पत्रकारिता का आशय बताइए।

   e. संपादक के दो दायित्वों का उल्लेख कीजिए।

6. दलितों पर अत्याचार विषय पर एक आलेख लिखिए।

OR

चुनाव प्रचार का एक दिन पर एक फीचर लिखिए।

OR

इंटरनेट पत्रकारिता के विकास पर टिप्पणी लिखिए।

Section C

7. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×3=6)**

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं-
यह सोच थका दिन का पथी भी जल्दी-जल्दी चलता हैं!

दिन जल्दी-जल्दी ढलता हैं!

i. 'हो जाए न पथ में'- यहाँ किस पथ की ओर कवि ने संकेत किया हैं?
ii. पथिक के तेज चलने का क्या कारण हैं?
iii. कवि दिन के बारे में क्या बताता हैं?

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×3=6)

किसबी, किसान-कुल, बुनिक, भिखारी, भाट,
चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी।
पेटको पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन-गन अहन अखेटकी।।
ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधुरम् करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।
'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी।।

i. काव्यांश से तुलसी के समय के समाज के बारे में क्या जानकारी मिलती है?
ii. 'पेट को पढ़त, गुन गढ़त गिरि' का अर्थ स्पष्ट किजिए और बताइए कि इन कार्यों को करने का क्या प्रयोजन है?
iii. पेट की आग की विशालता और भयावता को कवि ने कैसे प्रस्तुत किया है?

8. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2x2=4)**

खरगोश की आँखों जैसा लाल सबेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नई चमकीली साईकिल तेज़ चलाते हुए
घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से।

i. काव्यांश में आए बिंबों का उल्लेख कीजिए।
ii. प्रकृति में आए परिवर्तनों की अभिव्यक्ति कैसे हुई है?

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×2=4)

छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया

क्षण का बीज वहाँ बोया गया।

i. काव्यांश के भाव-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।
ii. मनोभावों की तुलना किससे की गई है?

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:

a. **कविता के बहाने** कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

b. जादू टूटता है इस उषा का अब -उषा का जादू क्या है? वह कैसे टूटता है?

c. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है? (गज़ल)

10. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2x3=6)**

फिर जीजी बोलीं, "देख तू तो अभी से पढ़-लिख गया है। मैंने तो गाँव के मदरसे का भी मुँह नहीं देखा। पर एक बात देखी है कि अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है तो किसान पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ। अपने पास से लेकर ज़मीन में क्यारियाँ बना कर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, क़स्बा, गाँव पर पानीवाले फ़सल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं। सब ऋषिमुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हे चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे। भईया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। यथा राजा तथा प्रजा सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि यथा प्रजा तथा राजा। यही तो गांधी जी महाराज कहते हैं।

i. बुवाई के लिए किसान किस प्रकार से श्रम करते हैं?
ii. त्याग की महत्ता को किसने बताया था? समाज के लिए यह क्यों ज़रूरी है?
iii. "यथा प्रजा तथा राजा' से जीजी क्या कहना चाहती थीं?

OR

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (2×3=6)

शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं। इस चिलकती धूप में इतना सरस वह कैसे बना रहता है? क्या ये बाह्य परिवर्तन-धूप, वर्षा, आँधी, लू अपने आप में सत्य नहीं हैं? हमारे देश के ऊपर से जो यह मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर बह गया है, उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है? शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों संभव हुआ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर है। गाँधीजी भी वायुमंडल से रस खींचकर इतने कोमल और इतने कठोर हो सकते थे। मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब-तब हूक उठती है-हाय, वह अवधूत आज कहाँ है?

i. शिरीष का वृक्ष लेखक पर क्या प्रभाव डालता है?

ii. लेखक शिरीष की किस विशेषता की चर्चा करता है?

iii. शिरीष स्थिर कैसे रह सका?

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)

a. बाज़ार दर्शन पाठ का प्रतिपाद्य बताइए?

b. जब सफ़िया अमृतसर पुल पर चढ़ रही थी तो कस्टम ऑफिसर निचली सीढ़ी के पास सिर झुकाए चुपचाप क्यों खड़े थे?

c. भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई?

d. चैप्लिन के व्यक्तित्व की तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनके कारण उन्हें भुलाना कठिन है?

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:

a. यशोधर पंत की पीढ़ी की विवशता यह है कि वे पुराने को अच्छा समझते हैं और वर्तमान से तालमेल नहीं बिठा पाते। **सिल्वर वैडिंग** कहानी के आधार पर इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

b. यशोधर बाबू अपने रोल मॉडल किशनदा से क्यों प्रभावित हैं? **सिल्वर वैडिंग** कहानी के आधार पर लिखिए।

c. जूझ कहानी आधुनिक किशोर-किशोरियों को किन जीवन-मूल्यों की प्रेरणा दे सकती है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

d. सिन्धु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्यबोध है जो राजपोषित न होकर समाज-पोषित था। ऐसा क्यों कहा गया है?

e. **डायरी के पन्ने** पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि ऐन फ्रैंक बहुत प्रतिभाशाली तथा परिपक्व थी?

CBSE Class 12 हिंदी कोर
Sample Paper 1 (2019-2020)

Solution

Section A

1. i. दबाव में काम करने से मनुष्य पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव निम्न हैं-
   i. व्यक्ति का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य क्षीण होता है।
   ii. व्यक्ति की कार्य क्षमता प्रभावित होती है, जिससे उसे अक्सर कार्यों को भली-भाँति करने में असफलता प्राप्त होती है।

   ii. व्यक्ति जब दबाव को सकारात्मक रूप में ग्रहण करके उसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार करता है और अपने कार्य को पूर्ण करने के लिए दृढ़ इच्छा से उसमें जुट जाता है, तो दबाव कार्य को सफलतापूर्वक करने में सहायक बनता है। सकारात्मकता से किया गया कार्य को सफलता अवश्य मिलती है।

   iii. दबाव के समय सकारात्मक सोच यह हो सकती है कि हम मौजूद समस्या पर ध्यान केंद्रित करने और उसे बोझ महसूस करने की बजाय यदि यह सोचे कि हम अत्यंत सौभाग्यशाली है कि हम कठिन चुनौतियों को पूरा करने के लिए तत्पर हैं, तो हमारी बेहतरीन क्षमताएँ स्वयं जागृत हो उठेगी।

   iv. काम करने की प्रक्रिया में मन, मस्तिष्क और शरीर तीनों परस्पर संबंधित होते हैं। मन में जो भी भाव सकारात्मक अथवा नकारात्मक सक्रिय होते हैं, उन्हीं के अनुरूप मस्तिष्क कार्य करता है और शरीर को कार्य करने का आदेश देता है।

   v. “जीतना एक आदत है, पर अफसोस! हारना भी आदत ही है" पंक्ति से लेखक का आशय है कि जीतना या हारना व्यक्ति की मानसिकता पर निर्भर करता है। अर्थात् व्यक्ति के मन में सकारात्मक या नकारात्मक जिन भावों की प्रबलता होगी, उसी का परिणाम उसके कार्यों पर पड़ेगा।

   vi. गद्यांश का केंद्रीय भाव यह है कि व्यक्ति को कार्यों को करते समय सामने आने वाली कठिनाइयों से घबराने के बजाय उनको चुनौती के रूप में स्वीकार करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए।व्यक्ति को अपने जीवन में सकारात्मक रहना चाहिए, और कठिन परिस्थिति में भी अपने आप पर से विश्वास नहीं खोना चाहिए।

   vii. प्रस्तुत गद्यांश का शीर्षक 'मानव जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण का महत्त्व' होना चाहिए।

2. i. प्रस्तुत पंक्ति कवि और देश को कही गई है। कवि ने देश को शरीर के समान समझा है।

   ii. कवि ने देश से अपना तादात्म्य शरीर, आत्मा और मन से जोड़ा है।

   iii. देश के अन्न, जल और वायु से पोषित होने के कारण।

   iv. शरीर, आत्मा और मन को कभी मिटने नहीं देगा।

Section B

3. **प्राकृतिक आपदाएँ**

प्राकृतिक आपदा को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि यह एक ऐसी प्राकृतिक घटना है जिससे अनेक लोग प्रभावित हों और उनका जीवन खतरे में हो। प्राकृतिक आपदा एक असामान्य प्राकृतिक घटना है, जो कुछ समय के लिए ही आती है, परंतु अपने विनाश के चिह्न लंबे समय के लिए छोड़ जाती है।

प्राकृतिक आपदाएँ अनेक तरह की होती हैं, जैसे-हरिकेन, सुनामी, सूखा, बाढ़, टायफून, बवंडर, चक्रवात आदि, मौसम से संबंधित प्राकृतिक आपदाएँ है। दूसरी ओर भूस्खलन एवं बर्फ की सरकती चट्टानें ऐसी प्राकृतिक आपदाएँ हैं, जिसमें स्थलाकृति परिवर्तित हो जाती है। भूकंप एवं ज्वालामुखी प्लेट विवर्तनिकी के कारण आने वाली प्राकृतिक आपदाएँ हैं। इन प्राकृतिक आपदाओं के पीछे उल्लेखनीय योगदान मानवीय गतिविधियों का भी होता है। मानव अपने विकास कार्यो के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करता है। वैश्विक तापीकरण भी प्राकृतिक आपदा का ही एक रूप है। वस्तुतः जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिक क्रियाकलाप तथा प्रकृति के साथ खिलवाड़ ऐसे मुख्य कारण हैं, जिनके कारण मानव समाज को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है।

प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण उपाय यह है कि ऐसी तकनीकों को विकसित किया जाए, जिससे प्राकृतिक आपदाओं की सटीक भविष्यवाणी की जा सके, ताकि समय रहते जान-माल की सुरक्षा संभव हो सके। इसी उद्देश्य के तहत अंतरिक्ष विज्ञान से इस क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता मिली है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक आपदा की स्थिति उपस्थित होने पर किस तरह उससे निपटना चाहिए, इसके लिए आपदा प्रबन्धन सीखना अति आवश्यक है। इस उद्देश्य हेतु एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम होना चाहिए तथा प्रत्येक नागरिक के लिए इसका प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए।

OR

परहित सरिस धर्म नहिं भाई

परोपकार से बड़ा इस संसार में कुछ नहीं होता है। इस विषय में गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि-

"परहित सरिस धर्म नहिं भाई।

परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।"

अर्थात् परहित (परोपकार) के समान दूसरा कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा (कष्ट) देने के समान कोई अन्य नीचता या नीच कर्म नहीं है। पुराणों में भी कहा गया है, 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्' अर्थात् दूसरों का उपकार करना सबसे बड़ा पुण्य तथा दूसरों को कष्ट पहुँचाना सबसे बड़ा पाप हैं।

परोपकार की भावना से शून्य मनुष्य पशु तुल्य होता है, जो केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति तक ही स्वयं को सीमित रखता है। मनुष्य जीवन बेहतर है क्योंकि मनुष्य के पास विवेक है। उसमें दूसरों की भावनाओं एवं आवश्यकताओं को समझने तथा उसकी पूर्ति करने की समझ है और इस पर भी अगर कोई केवल अपने स्वार्थ को ही देखता हो, तो वाकई वो मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है।

इसी कारण मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इस दुनिया में महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह, दधीचि ऋषि, अब्राहम लिंकन, मदर टेरेसा, बाबा आम्टे जैसे अनगिनत महापुरुषों के जीवन का उद्देश्य परोपकार ही था। भारतीय संस्कृति में भी इस तथ्य को रेखांकित किया गया है कि मनुष्य को उस प्रकृति से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिसके कण-कण में परोपकार की भावना व्याप्त है। भारतीय संस्कृति में इसी भावना के कारण पूरी पृथ्वी को एक कुटुंब माना गया है तथा विश्व को परोपकार संबंधी संदेश दिया गया है। इसमें सभी जीवों के सुख की कामना की गई है।

OR

आज की बचत कल का सुख

वर्तमान आय का वह हिस्सा, जो तत्काल व्यय (खर्च) नही किया गया और भविष्य के लिए सुरक्षित कर लिया गया 'बचत' कहलाता है। पैसा सब कुछ नहीं रहा, परंतु इसकी ज़रूरत हमेशा सबको रहती है। आज हर तरफ़ पैसों का बोलबाला है क्योंकि पैसों के बिना कुछ भी नहीं। आज ज़िंदगी और परिवार चलाने के लिए पैसे की ही अहम भूमिका होती है। आज के समय में पैसा कमाना बहुत मुश्किल है । उससे कहीं अधिक कठिन है, पैसे को अपने भविष्य के लिए सुरक्षित बचाकर रखना, क्योंकि अनाप-शनाप खर्च और बढ़ती महँगाई के अनुपात में कमाई के स्रोतों में कमी होती जा रही है इसलिए हमारी आज की बचत ही कल हमारे भविष्य को सुखी और समृद्ध बना सकने में अहम भूमिका निभाएगी। आज के दौर में बचत नहीं करना एक मूर्खतापूर्ण निर्णय साबित होता है।

जीवन में अनेक बार ऐसे अवसर आ जाते हैं, जैसे आकस्मिक दुर्घटनाएँ हो जाती हैं, रोग या अन्य शारीरिक पीड़ाएँ घेर लेती हैं, तब हमें पैसों की बहुत आवश्यकता होती है। यदि पहले से बचत न की गई तो विपत्ति के समय हमें दूसरों के आगे हाथ फैलाने पड़ सकते हैं। कभी-कभी तो पैसों के अभाव में बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता है और हम कुछ कर भी नहीं पाते हैं। हमारी आज की छोटी-छोटी बचत या धन निवेश ही हमें भविष्य में आने वाले तमाम खर्चे का मुफ्त समाधान कर देती है। आज की थोड़ी-सी समझदारी आने वाले भविष्य को सुखद बना सकती है। बचत करना एक अच्छी आदत है, जो हमारे वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी लाभदायक सिद्ध होती है। किसी ज़रूरत या आकस्मिक समस्या के आ जाने पर बचाया गया पैसा ही हमारे काम आता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि बचत करके हम अपने भविष्य को सँवार सकते हैं तथा आकस्मिक दुर्घटनाओं और भविष्य की मुसीबतों से बच सकते हैं।

4. सेवा में,

   प्रबंधक महोदय,

   स्पार्क हेवन होटल,

   नैनीताल, उत्तराखंड।

   17 अप्रैल, 2019

   विषय -होटल में कमरे आरक्षित करवाने हेतु।

   महोदय,

   मैं जय प्रकाश, दिल्ली का निवासी हूँ। मैंने आपके होटल की आवभगत के विषय में बहुत प्रशंसा सुनी है। मैं और मेरा परिवार दिनांक 25 अप्रैल, 2019 से 27 अप्रैल, 2019 तक नैनीताल में पर्यटन के उद्देश्य से आ रहे हैं इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप अप्रैल 20, 2019 से 27 अप्रैल 27 , 2019 तक की दिनांक के लिए मेरे नाम से दो कमरे आरक्षित कर दीजिए।

   धन्यवाद

   भवदीय

   जय प्रकाश

   दिल्ली

OR

सेवा में
मुख्य अभियंता,
लोक निर्माण विभाग,
दिल्ली।

15 अप्रैल, 2019

विषय - सड़कों के रख-रखाव हेतु।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं गोविन्द प्रसाद, बसई गाँव का निवासी हूँ। निकट के शहर से हमारे गाँव को जो सड़क जोड़ती है ,उसका अभी कुछ ही दिनों पूर्व लोक निर्माण विभाग की ओर से निर्माण करवाया गया था। सड़क का उचित रख-रखाव न करने के कारण सड़क पर दोनों ओर गंदगी फैली रहती है, लोग अपने घर का कूड़ा वहाँ डालने लगे हैं। इसके अतिरिक्त सड़क भी बीच-बीच में कई जगह से टूट गई है,और सड़क पर जगह-जगह गढ्ढे बन गए हैं, जिससे आने-जाने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

अतः महोदय मेरा आपसे अनुरोध है कि सड़क पर कूड़ा डालने वाले लोगों को चेतावनी देकर वहाँ पर कूड़ा न डालने का निर्देश दिया जाए और सड़क को पुनः निर्माण करके उसे उपयोग करने के लायक बनाया जाए।

आशा है कि आप मेरे इस पत्र द्वारा प्राप्त सूचना पर शीघ्रातिशीघ्र कदम उठाएँगे।

धन्यवाद

भवदीय

गोविन्दप्रसाद

बसई गाँव

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

   a. समाचार का अंग्रेजी पर्याय (NEWS) चारो दिशाओं को सांकेतिक करता है। अपने आस-पास के समाज एवं देश-दुनिया की घटनाओं के विषय मे त्वरित एवं नवीन जानकारी, जो पक्षपात रहित एवं सत्य हो, समाचार कहलाता है।

   b. **फोन इन** कार्यक्रम रेडियो या टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले वे कार्यक्रम होते हैं, जिनमे किसी सामाजिक, सांस्कृतिक या जागरूकतापरक कार्यक्रम में दर्शकों को फोन करके जानकारी ग्रहण करने या अपने विचार प्रस्तुत करने का अधिकार होता है।

   c. समाचार के आमुख को 'मुखड़ा' या 'इंट्रो' कहा जाता है। यह समाचार का पहला अनुच्छेद होता है। आमुख या इंट्रो के अतिरिक्त समाचार के शेष भाग को बॉडी या क्लेवर कहा जाता है।

d. कहीं किसी प्रकार की गड़बड़ी को सार्वजनिक करना 'वॉचडॉग पत्रकारिता' कहलाता है। यह सरकारी सूत्र पर आधारित पत्रकारिता है।

e. **संपादक के दो दायित्व निम्नलिखित हैं-**

i. संवाददाताओं तथा रिपोर्टरों द्वारा प्राप्त लिखित सामग्री को शुद्ध कर प्रस्तुति के योग्य बनाना।
ii. समाचार-पत्र की नीति, आचार-संहिता तथा जनकल्याण का ध्यान रखना।

6. **दलितों पर अत्याचार**

एक तरफ हम अपने देश में अनेक प्रकार के बदलाव उसके विकास के नाम पर कर रहे हैं, और दूसरी तरफ नीचले तबके के लोगों के साथ अमानवीय व्यवहार कर रहे हैं। हम भले ही 21वी सदी में जी रहे हैं, पर हमारी सोच आज भी प्राचीन काल वाली है। हमारे देश में पिछले कुछ वर्षों से दलितों पर अत्याचार का विष-वृक्ष तेजी से फैलता ही जा रहा है। वर्तमान में तो इस समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया है। सामाजिक बदलाव और तरक्की की बातें और दावे चाहे जितने कर लिए जाएँ, मगर ये सच्चाई से काफी दूर है। सच यह है कि गाँवो में छुआछूत आज भी कायम हैं। इस सामाजिक विकृति की जड़ें कितनी गहरी हैं, इसका अंदाजा इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि सरकारी स्वास्थ्यकर्मी दलितों के घर जाने से कतराते है, स्कूलों में उनके बच्चों को अलग बिठाकर खाना दिया जाता है। डाकिये दलितों को चिट्ठी देने नहीं जाते और उन्हें सार्वजनिक जल स्रोतों से पानी लेने से भी रोका जाता है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड के अनुसार, बिहार में दलितों के प्रति अत्याचार पहले से बढ़ा है। राज्य में वर्ष 2005 में दलितों पर अत्याचार के 1,572 मामले दर्ज हुए थे, लेकिन पिछले साल इनकी संख्या 2,786 हो गई। उत्तर प्रदेश का भी हाल कुछ ऐसा ही है, जबकि राज्य में दलित आबादी कुल जनसंख्या का 21% है। खास बात यह है कि ये आँकड़े सरकार की निगाह में होने के बावजूद स्थिति बदलने के लिए कुछ खास नहीं किया जा रहा है।

OR

चुनाव प्रचार का एक दिन

चुनाव लोकतंत्र के लिए एक त्योहार से कम नहीं है।चुनाव लोकतांत्रिक प्रणाली में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चुनाव प्रक्रिया के माध्यम से ही जनता अपने प्रतिनिधियों का चयन करती है, जो आगे चलकर शासन प्रणाली को सँभालते हैं। सभी प्रतिनिधि अपने प्रभुत्व को स्थापित करने के लिए चुनाव प्रचार को माध्यम बनाते हैं। चुनाव-प्रचार मतदाताओं को प्रभावित करने में अहम भूमिका निभाता है। चुनाव प्रचार में लाउडस्पीकर, पोस्टर, पैंपलेट आदि अन्य प्रकार की सामग्रियों का प्रयोग किया जाता है। चुनाव प्रचार में प्रतिनिधि जोकि भिन्न-भिन्न पार्टियो के उम्मीदवार होते हैं, वह जनता के घर-घर जाकर अपने लिए स्वयं वोट माँगते हैं। चुनाव प्रचार की अनेक प्रक्रियाएँ होती हैं, सब के प्रचार के अपने अलग अलग ढंग होते हैं। अधिकांश लोग चुनाव प्रचार के दौरान नोटों की मदद से वोट खरीदते हैं,तो कुछ लोग ईमानदारी से चुनाव प्रचार करते हैं ,परंतु ईमानदारों की संख्या बहुत कम है।
चुनाव प्रचार की प्रक्रिया चुनाव होने के दो दिन पहले ही बंद हो जाती है। सभी उम्मीदवार अपने-अपने क्षेत्र मे नए-नए तौर

तरीकों से जनता को लुभाने का कार्य करते हैं। चुनाव-प्रचार के दौरान बहुत से प्रत्याशी गलत व अनैतिकता का प्रयोग भी करते हैं। चुनाव प्रचार के समय प्रत्याशी अपना वोट पाने के लिए खरीद-फरोख़्त की राजनीति को भी जन्म देते हैं।
चुनाव प्रचार के दो पक्ष हैं, जिसमे पहला यह है कि इसके माध्यम से उम्मीदवार स्वयं को मतदाताओं से परिचित करवाता है और अपने एजेंडा को उन मतदाताओं के सम्मुख प्रस्तुत करता है।
कहा जाए तो इस सकारात्मक तरीके से वह मतदाताओं पर प्रभाव स्थापित कर अपना वोट पक्का करना चाहता है, परंतु इसका दूसरा तरीका अत्यंत बुरा है, जो समाज में कुप्रवृत्तियों को जन्म देता है तथा राजनीति को एक गंदा खेल बनाकर प्रस्तुत करता है। अंत में कहना चाहिए कि चुनाव प्रचार बहुत ही रोमांचकारी प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया को सही रूप से प्रयोग में लाया जाए, तो हम सही प्रत्याशी को चुनकर देश के भविष्य को सुनिश्चित कर सकेंगे।

OR

संचार के अत्याधुनिक माध्यम के रूप में इन्टरनेट की उपयोगिता आज सर्वविदित है। इन्टरनेट पत्रकारिता को ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता, वेब पत्रकारिता आदि नामों से जाना जाता है। भारत में इंटरनेट पत्रिका का प्रारंभ 1993 से माना जाता है। 'रीडिफ डॉट कॉम' भारत की पहली साइट मानी जाती है परन्तु-विशुद्ध वेब पत्रकारिता का प्रारम्भ 'तहलका डॉट कॉम' ने किया। वर्तमान समय में इण्टरनेट की गति के विकास के साथ साइबर पत्रकारिता का भी तीव्र गति से विकास हो रहा है। आज के दौर में लगभग सभी समाचार पत्रे, पत्रिकाएँ अपने ई-संस्करण प्रकाशित करते हैं। ई-संस्करण के जरिए पाठक विश्व के किसी भी कोने से सम्बन्धित समाचारों को पढ़ सकता है। वेब-पत्रकारिता के प्रारम्भिक दौर में मानक की-बोर्ड व फांट की समस्या रही, परन्तु वर्तमान में मंगल यूनिकोड फांट के विकास के कारण यह समस्या नहीं रही। विविध विषयों पर लेख आज इन्टरनेट पत्रकारिता का अंग बन चुके हैं। समाचारों के साथ-साथ साहित्यिक लेखन भी किया जा रहा है।

Section C

7. i. 'हो जाए न पथ में'- के माध्यम से कवि अपने जीवन-पथ की ओर संकेत कर रहा है, जिस पर वह अकेले चल रहा है। उसे भय है कि चलते-चलते कहीं रात न हो जाए और वह अपने प्रिय से न मिल पाये।
   ii. पथिक तेज इसलिए चलता है क्योंकि शाम होने वाली है और लक्ष्य समीप है। चलते-चलते कहीं रात न हो जाए ऐसा सोचकर वह जल्दी चलकर अपनी मंजिल तक पहुँचना चाहता है।
   iii. कवि कहता है कि दिन जल्दी-जल्दी ढलता है। दूसरों शब्दों में, समय परिवर्तनशील है। वह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता इसलिए समयानुकुल आचरण करना चाहिए।

OR

i. इस काव्यांश से तुलसी के समय के समाज की आर्थिक स्थिति के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है। समाज में निर्धनता व्याप्त थी। लोग पेट की आग बुझाने के लिए कोई भी उचित-अनुचित कार्य करने को तैयार रहते थे। भूख मिटाने के लिए लोग अपनी संतान तक बेच डालते थे। मजदूर, किसान, व्यापारी, भाट, भिखारी, नट बाजीगर, नौकर किसी की स्थिति ठीक नहीं थी। सभी लोग पेट भरने के लिए हर संभव प्रयास करते थे।
ii. सभी लोग पेट भरने के लिए ही पढ़ते थे। वे अपने गुणों का प्रयोग पेट भरने के लिए ही करते थे तथा अपनी भूख शांत

करने के लिए पहाड़ों अर्थात् दुर्गम स्थलों में भी चले जाते थे।

iii. कवि ने पेट की आग की विशालता और भयावहता को स्पष्ट करने के लिए कहा है कि पेट की आग बड़वाग्नि अर्थात समुद्र की आग से भी बड़ी आग होती है क्योंकि यह आग कभी बुझती नहीं। लोग भूख की ज्वाला को मिटाने के लिए बेटा-बेटी तक बेच डालते हैं।

8. i. उपर्युक्त पदयांश के आधार पर कवि ने दृश्य बिम्ब का प्रयोग किया है जैसे -
   - खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
   - शरद ऋतु के प्रारंभ का बच्चे के रूप में चित्रण करते हुये उसका अपनी नई साइकिल तेजी से चलाते और घंटी बजाते हुए आना।

   ii.
   - वर्षा ऋतु के पश्चात् शरद ऋतु के खुशनुमा आगमन पर प्रकृति में परिवर्तन होते हैं जैसे मौसम साफ होने के कारण बच्चों के खेलकूद कर अपनी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति करते हैं।
   - चारों ओर मनभावनी चमकीली कोमल धूप बिखरी रहती है।

OR

i. प्रस्तुत काव्यांश में खेती के कार्यों के रूपकों के जरिए कवि ने अपने रचना-कर्म को व्याख्यायित किया है। जिस प्रकार खेत में बीज बोया जाता है, वैसे ही कवि मनोभावों और विचारों के बीज बोता है। इस बीजारोपण से शब्द रूपी अंकुर फूटते हैं और साहित्यिक कृति रूपी फसल विकसित होती है। इसके माध्यम से कवि ने साहित्य की जीवंतता और अनंतकाल तक उसके अस्तित्व में बने रहने की बात कही है।

ii. मनोभावों की तुलना 'अंधड़' से की गई है क्योंकि भावना एवं विचार आँधी की तरह मन में आते हैं तभी तीव्र मनोभावों की उत्पत्ति द्वारा काव्य-सृजन होता है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:

a. कविता एक यात्रा है जो चिड़िया, फूल, बच्चे के भावों एवं विकास को अभिव्यक्त करती है। एक ओर प्रकृति की सीमा है तो दूसरी ओर भविष्य की ओर कदम बढ़ाता बच्चा। कवि कहता है कि चिड़िया एक सीमा तक उड़ान भरती है। फूल की उत्पत्ति के साथ ही उसके मुरझाने की सीमा तय होती है लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं। बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं होता और न ही कोई रोक-टोक होती है। उसी प्रकार कविता भी शब्दों का खेल है और शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य-सभी उपकरण मात्र हैं। इसलिए जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होगी, वहाँ सीमा खुद बंधन मुक्त हो जाती हैं। वह सीमा चाहे घर की हो, भाषा की हो या समय की ही क्यों न हो।

b. सूर्योदय से पूर्व आकाश में नए-नए रंग उभरते हैं। लाल-काले रंगों के अद्भुत मेल से आकाश में जादू जैसा वातावरण बन जाता है। इस रंग-बिरंगे वातावरण को 'उषा का जादू' कहा गया है। सूर्योदय होते ही ये सारे रंग विलीन हो जाते हैं और उषा का जादू टूट जाता है।

c. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर यह बताना चाहता है कि सावन मास में रक्षाबंधन का पर्व

मनाया जाता है । इन दिनों जोरदार बारिश होती है,बादलों में जिस तरह बिजली चमकती है उसी प्रकार बहनें चमकती राखी भाई के हाथों में बाँधकर उनके उज्वल भविष्य की कामना करती है। रक्षाबंधन एक मधुर प्रेम का बंधन है। सावन का जो संबंध झीनी घटा से है, घटा का जो संबंध बिजली से है वही संबंध भाई का बहन से होता है, राखी के लच्छे उसी संबंध का प्रतीक है।

10. i. किसान जमीन की निराई, गुड़ाई करके मिट्टी तोड़कर हल चलाकर खेत तैयार करता है और फिर बीज-खाद डालकर , सिंचाई करता है तब जाकर फसल तैयार होती है।
    ii. ऋषि मुनियों ने बताया है पहले स्वयं देना होगा तभी देवता उसे कई गुना करके लौटाएँगे।
    iii. इस कथन का अर्थ है कि प्रजा में इतनी शक्ति होती है कि वह अपने अनुसार राजा को चलने के लिए बाध्य कर सकती है।

OR

i. एक अवधूत के समान शिरीष का वृक्ष लेखक के मन में इस प्रकार की तरंगें जगा देता है, जो हमेशा ही ऊपर की ओर उठती रहती हैं।
ii. शिरीष की विशेषता है कि वह चिलचिलाती धूप में भी सरस बना रहता है। वह बाहरी परिवर्तनों, धूप, वर्षा, आँधी, लू आदि को झेलकर भी स्थिर बना रहता है।
iii. शिरीष एक कालजयी अवधूत के समान है। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर कोमल और कठोर बना रहता है।

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)

a. **बाज़ार दर्शन** निबंध में गहरी वैचारिकता व साहित्य के सुलभ लालित्य का संयोग है। कई दशक पहले लिखा गया यह लेख भी उपभोक्तावाद व बाज़ारवाद को समझाने में बेजोड़ है। लेखक अपने परिचितों, मित्रों से जुड़े अनुभव बताते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि बाज़ार की जादुई ताकत मनुष्य को अपना गुलाम बना लेती है। यदि हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक समझकर बाज़ार का उपयोग करें तो उसका लाभ उठा सकते हैं। इसके विपरीत, बाज़ार की चमक-दमक में फँसने के बाद हम असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल होकर सदा के लिए बेकार हो सकते हैं। लेखक ने कहीं दार्शनिक अंदाज़ में तो कहीं किस्सागों की तरह अपनी बात समझाने की कोशिश की है। इस क्रम में उन्होंने बाज़ार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र बताया है।

b. जब सफ़िया अमृतसर पुल पर चढ़ रही थी तो उनकी देशभक्ति की भावना से प्रभावित होकर कस्टम ऑफिसर निचली सीढ़ी के पास सिर झुकाए चुपचाप खड़े थे । उन्हें महसूस हो रहा था कि आप कहीं भी क्यों न चले जाएँ अपना वतन याद आ ही जाता है और इस समय सिख बीबी का प्रसंग छिड़ने पर ऑफिसर को भी उसके वतन ढाका की याद आ गई थी। आज उनकी मन:स्थिति सिख बीबी की तरह ही है, वतन याद आते ही वे द्रवित हो उठते है।

c. महादेवी, भक्तिन को नहीं बदल पायी पर भक्तिन ने महादेवी को बदल दिया। भक्तिन देहाती महिला थी और शहर में आने के बाद भी उसने अपने-आप में कोई परिवर्तन नहीं आने दिया। भक्तिन देहाती खाना गाढ़ी दाल, मोटी रोटी,

मकई की लपसी, ज्वार के भुने हुए भुट्टे के हरे दाने, बाजरे के तिल वाले पुए आदि बनाती थी और महादेवी को वैसे ही खाना पड़ता था। भक्तिन के हाथ का मोटा-देहाती खाना खाते-खाते महादेवी का स्वाद बदल गया और वे भक्तिन की तरह ही देहाती बन गई।

d. चैप्लिन के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं जिनके कारण उन्हें भुलाना कठिन हैं-

i. चार्ली चैप्लिन सदैव खुद पर हँसते थे।
ii. वे सदैव युवा या बच्चों जैसा दिखते थे।
iii. कोई भी व्यक्ति उन्हें बाहरी नहीं समझता था।
iv. उनकी फ़िल्मों में हास्य कब करुणा के भाव में परिवर्तित हो जाता था, पता नहीं चलता था।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:

a. **सिल्वर वैडिंग** का के नायक यशोधर बाबू हैं। वे रहते तो वर्तमान में हैं, परंतु जीते अतीत में हैं। वे अतीत को आदर्श मानते हैं। यशोधर को पुरानी जीवन शैली, विचार आदि अच्छे लगते हैं, वे उनका स्वप्न हैं। परंतु वर्तमान जीवन में वे अप्रासंगिक हो गए हैं। कहानी में यशोधर का परिवार नए ज़माने की सोच का है। वे प्रगति के नए आयाम छूना चाहते हैं। उनका रहन-सहन, जीने का तरीका, मूल्यबोध, संयुक्त परिवार के कटु अनुभव, सामूहिकता का अभाव आदि सब नए ज़माने की देन है। यशोधर को यह सब 'समहाड इम्प्रापर' लगता है। उन्हें हर नई चीज़ में कमी नजर आती है। वे नए जमाने के साथ तालमेल नहीं बना पा रहे। वे अधिकांश बदलावों से असंतुष्ट हैं। वे बच्चों की तरक्की पर खुलकर प्रतिक्रिया नहीं दे पाते। यहाँ तक कि उन्हें बेटे भूषण के अच्छे वेतन में भी कमी नजर आती है। दरअसल यशोधर बाबू अपने समय से आगे निकल नहीं पाए। उन्हें लगता है कि उनके जमाने की सभी बातें आज भी वैसी ही होनी चाहिए।

b. यशोधर बाबू पर किशनदा का पूर्ण प्रभाव था क्योंकि उन्होंने यशोधर बाबू को कठिन समय में सहारा दिया। यशोधर भी उनकी हर बात का अनुकरण करना चाहते थे। चाहे ऑफ़िस का कार्य हो, सहयोगियों के साथ संबंध हो, सुबह की सैर हो, शाम को मंदिर जाना, पहनने-ओढ़ने का तरीका, किराए के मकान में रहना, रिटायरमेंट के बाद गाँव जाने की बात आदि – इन सब पर किशनदा का प्रभाव है। बेटे द्वारा ऊनी गाउन उपहार में देने पर उन्हें लगता है कि उनके अंगों में किशनदा उतर आए हैं क्योंकि उन्होंने यह महसूस किया कि इस आधुनिकता के दौड़ में गृहस्थ होकर भी वह उतने ही अकेले हैं जितने कि किशनदा।

c. **जूझ कहानी में किशोर युवक के संघर्ष को व्यक्त किया गया है। यह संघर्ष आधुनिक युवाओं को प्रेरणा दे सकता है जो निम्नलिखित हैं-**

- दूरदर्शिता- कहानी का नायक 'आनंदा' दूरदर्शी है। वह किशोर अवस्था में ही पढ़ाई के महत्त्व को समझ गया था। उसे पता था कि खेती में ज्यादा आमदनी नहीं है। वह नौकरी या व्यवसाय का महत्त्व समझ गया था।
- मेहनती- आनंदा बेहद मेहनती था। वह खेत में कठोर मेहनत करता था तथा पढ़ाई में भी वह अव्वल था। यह प्रेरणा नए युवा ले सकते हैं।

- संघर्षशीलता- आधुनिक किशोर-किशोरियाँ कम संघर्ष से सफलता अधिक चाहते हैं। आनंदा ने पढ़ाई, खेती, स्कूल, समाज हर जगह प्रतिकूल परिस्थितियाँ होते हुए भी सफलता पाई। उसकी यह संघर्ष गाथा आज के युवा वर्ग के लिए सीख है कि साधन संपन्न होना आवश्यक नहीं बल्कि संघर्ष के द्वारा सफलता प्राप्त हो सकती है।
- अभ्यास- आनंदा पढ़ाई में ध्यान देता था। कविता का अभ्यास वह भैंस की पीठ पर, पत्थर पर, खेतों में हर जगह करता था। गणित में भी वह बेहद होशियार था। नए विद्यार्थी अभ्यास करने की प्रेरणा ले सकते हैं।

d. सिन्धु सभ्यता में औजार तो बहुत मिले हैं, परंतु हथियारों का भी प्रयोग होता रहा होगा इसका कोई प्रमाण नहीं है। वहां की नगर योजना, वास्तुशिल्प, मुहरों-ठप्पों, पानी या साफ़-सफ़ाई जैसी व्यवस्थाओं में एकरूपता थी। वे लोग अनुशासन प्रिय थे परन्तु यह अनुशासन किसी ताकत के बल के द्वारा कायम नहीं किया गया, बल्कि लोग अपने मन और कर्म से ही अनुशासन प्रिय थे। मुअनजो-दड़ो की खुदाई में एक दाढ़ी वाले नरेश की छोटी मूर्ति मिली है परन्तु यह मूर्ति किसी राजतंत्र या धर्मतंत्र का प्रमाण नहीं कही जा सकती। विश्व की अन्य सभ्यताओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन से भी यही अनुमान लगाया जा सकता है कि सिन्धु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्यबोध है जो कि समाज पोषित है, राजपोषित या धर्मपोषित नहीं है।

e. ऐन फ्रैंक की प्रतिभा और धैर्य का परिचय हमें उसकी डायरी से मिलता है। उसमें किशोरावस्था की झलक कम और सहज शालीनता अधिक देखने को मिलती है। ऐन ने अपने स्वभाव और अवस्था पर नियंत्रण पा लिया था। उसकी अवस्था के अन्य किसी बच्चे में इतनी परिपक्वता देखने को नहीं मिलती। वह एक सकारात्मक, परिपक्व और सुलझी हुई सोच के साथ आगे बढ़ रही थी। उसमें कमाल की सहनशक्ति थी। अनेक बातें जो उसे बुरी लगती थीं, उन्हें वह शालीन चुप्पी के साथ बड़ों के सम्मान करने के लिए सहन कर जाती थी।
पीटर के प्रति अपने अंतरंग भावों को भी वह सहेज कर केवल डायरी में व्यक्त करती थी। अपनी इन भावनाओं को वह किशोरावस्था में भी जिस मानसिक स्तर से सोचती थी वह वास्तव में सराहनीय है। परिपक्व सोच का ही परिणाम था कि वह अपने मन के भाव, उद्‌गार, विचार आदि डायरी में ही व्यक्त करती थी। यदि ऐन में ऐसी सधी हुई परिपक्वता न होती तो हमें युद्ध काल की ऐसी दर्द भरी कहानी पढ़ने को नहीं मिल सकती थी।